निदेशक का संदेश

बढ़ती हुई आबादी एवं इसके परिणामस्वरूप खाद्य के रूप में मछली की बढती हुई मांग के मद्देनजर मत्स्य पालन और जलीय कृषि खाद्य सुरक्षा, पोषण और रोजगार सुनिश्चित करने में यह संस्थान महत्वपूर्ण भूमिका निभा रहा है। सतत विकास लक्ष्यों (एसडीजी) को पूरा करने में मत्स्य पालन क्षेत्र के योगदान को अच्छी तरह से मान्यता दी गई है। बढ़ते मत्स्य पालन क्षेत्र को सतत विकास सुनिश्चित करने के लिए आवश्यक अनुसंधान एवं विकास को चलाने के लिए विशेष, गुणवत्ता वाले मानव संसाधनों की अत्यंत आवश्यकता है।

वैश्विक मत्स्य अनुसंधान और शिक्षा ने विविधता की बढ़ती मांग और विशेषज्ञता की विस्तृत श्रृंखला पर उत्कृष्ट कार्य किया है। भाकृअनुप-केंद्रीय मात्स्यिकी शिक्षा संस्थान ने बुनियादी, रणनीतिक और व्यावहारिक अनुसंधान में संलग्न होने और मात्स्यिकी विकास के लिए नीतिगत सहायता प्रदान करने के अलावा, एक प्रशिक्षण संस्थान से विशिष्ट मानव संसाधनों का उत्पादन करने वाले उत्कृष्टता केंद्र में भी महत्वपूर्ण परिवर्तन किया है। फिर भी, इस क्षेत्र और समाज के वर्तमान और कथित प्रभाव और प्रासंगिकता के आलोक में हमारे अकादमिक और अनुसंधान कार्यक्रमों का लगातार मूल्यांकन और संरेखण करना आवश्यक है। इसके अलावा, व्यापक मत्स्य पालन शिक्षा और प्रशिक्षण कार्यक्रमों को डिजाइन करने के लिए एक रणनीति तैयार करने के लिए क्षेत्र की कौशल-आवश्यकता का निरंतर मूल्यांकन आवश्यक है।

इन लक्ष्यों को पूरा करने के लिए विशिष्ट क्षेत्रों में संकाय का क्षमता निर्माण एक प्राथमिकता है। हितधारक-अनुपालन और व्यवहार्य होने के अलावा, विश्व स्तर पर प्रतिस्पर्धी और स्थानीय रूप से प्रासंगिक बने रहने के लिए सभी हितधारकों को शामिल करना हमारे लिए भी आवश्यक है। इन मुख्य दक्षताओं के अलावा, विकासात्मक और नियामक प्रक्रियाओं में संलग्न होने के लिए मानव संसाधन और उद्यमिता क्षमता होना भी महत्वपूर्ण है। बदलती जरूरतों के अनुकूल और विकसित होना भी अत्यंत महत्वपूर्ण है और इसके लिए, राष्ट्रीय और अंतर्राष्ट्रीय नीतियों और संस्थागत तंत्रों में गहरी अंतर्दृष्टि के साथ मानव संसाधन, मूल क्षमताओं के अलावा, अनिवार्य हैं। इस संदर्भ में, मानव संसाधन विकास के क्षेत्र में राष्ट्र को छह दशकों से अधिक की शानदार सेवाओं के साथ भाकृअनुप के प्रमुख मात्स्यिकी संस्थान का हिस्सा बनना वास्तव में मेरे लिए एक बड़े सौभाग्य की बात है। वैश्विक मात्स्यिकी मानचित्र में उत्कृष्टता का एक प्रमुख केंद्र बनने की दृष्टि को साकार करने की हमारी यात्रा में, मैं सभी हितधारकों और शुभचिंतकों के समर्थन

के लिए तत्पर हूं। आइए हम अपने संगठन को नई ऊंचाइयों पर ले जाने और मत्स्य पालन क्षेत्र के सतत विकास और विकास में योगदान करने के लिए खुद को समर्पित करें।

(डा. रविशंकर सी. एन.)
निदेशक / कुलपति
भा.कृ.अनु.प.-के.मा.शि.सं., मुंबई